Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

21 वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक हेतु अपेक्षित दक्षताएँ

ममता
असि. प्रोफेसर, शिक्षापीठ
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नवदेहली

शोधसारांश– अन्त में यही कहा जा सकता है कि आज शिक्षक और विद्यार्थी दोनों अपना दायित्व व अधिकार का उचित प्रयोग करे, शिक्षा की दिशा और दशा तभी ठीक हो सकती है शिक्षक अपने आप में दक्ष है और उसका प्रयोग भी करता है परन्तु क्या ऐसा वातावरण है जो उसकी दक्षता का परिचय दे सकें। शिक्षकों का मानवीय संवर्द्धन के लिए उसको स्वतन्त्रता देनी चाहिए। व्यावसायिक संवर्द्धन की जगह मानवीय दायित्व संवर्द्धन पर बल देना चाहिए।

मुख्य शब्द:– शिक्षक, विद्यार्थि, मानवीय, शिक्षा, दक्षता ।

शिक्षा कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जीवन से सभी पक्षों में समाहित होती है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिससे साध्य की प्राप्ति की जा सकती है। शिक्षा साधन एवं साध्य दोनों रूपों में परिलक्षित होती है। समाज में परिवर्तन का कारण ही शिक्षा है। संगठन के आधार पर शिक्षा को तीन प्रकार से बाँटा जा सकता है। i) औपचारिक शिक्षा ii) अनौपचारिक शिक्षा iii) निरौपचारिक शिक्षा तीनों प्रकार की शिक्षा पारस्परिक अभिन्न है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में औपचारिक शिक्षा के पाँच स्तर है – प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और उच्च शिक्षा। उच्च शिक्षा से सम्बन्धित उद्देश्यों को सबसे पहले विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) में बताएँ हैं–

- उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ऐसे नागरिकों को तैयार करना है जो राजनीति, प्रशासन, उद्योग, व्यवसाय और वाणिज्य के क्षेत्र में नेतृत्व करें।
- देश की संस्कृति एवं सभ्यता का विकास करना।
- व्यक्ति के जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण द्वारा उनका विकास करना।
- समस्त प्रकार के ज्ञानार्जन के अवसर प्रदान करना।
- ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो प्रजातंत्र को सफल बनाने के लिए शिक्षा का प्रयास करें। न्याय एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता की रक्षा करें।
- मौलिक विचारों आविष्कारों तथा शोधों के माध्यम से समाज को शक्तिशाली तथा गतिमान बनाना।
- विद्यार्थियों में नैतिक गुणों, अनुशासन और विवेकशील व्यवहार को जन्म देना तथा विकसित करना।
- ऐसी विचारधाराओं का जन्म देना जो विश्व प्रेम और विश्वशांति को शक्ति प्रदान करें।

कोठारी आयोग ने भी उच्च शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार विमर्श किया। इस आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार है –

- नवीन ज्ञान की खोज करना, सत्य की प्राप्ति के लिए निर्भय होकर कार्य करना तथा नवीन आवश्यकताओं व अन्वेषकों के सन्दर्भ में प्राचीन ज्ञान का विश्लेषण करना।
- जीवन के सभी क्षेत्रों में उचित नेतृत्व प्रदान करना। इसके लिए प्रतिभाशाली युवकों को खोजकर उनमें मानसिक शक्ति, अभिरुचि, सुप्रवृत्ति एवं नैतिकता विकसित करना।
- कृषि, कला, चिकित्सा विज्ञान व तकनीकी तथा अन्य व्यवसायों में निपुण व प्रशिक्षित नागरिक तैयार करना।
- शिक्षा के द्वारा समानता व सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना तथा सांस्कृतिक व सामाजिक विभिन्नताओं को कम करना।
- अध्यापकों तथा छात्रों में एवं उनके माध्यम से समस्त समाज में सत् जीवन के लिए आवश्यक मूल्य विकसित करना ।

सिंह एवं साथियों (1986) ने उच्च शिक्षा के निम्न पाँच उद्देश्य बताएँ हैं –

i. सम्बन्धित विषय का गहराई से ज्ञान प्रदान करना।
ii. विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक योग्यता।
iii. व्यावसायिक कौशलों का विकास करना।
iv. प्राप्त ज्ञान को दैनिक जीवन से जोड़ना एवं उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
v. सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों का विकास करना ।

आज 21वीं सदी में उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अध्यापक शैक्षिक पद्धति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सक्रिय घटक होता है। शिक्षा पद्धति की सफलता उसके गुणों
पर आश्रित रहती है। उच्च शिक्षा का अध्यापक कैसा हो? अच्छा अध्यापक एवं आदर्श अध्यापक कैसा होना चाहिए? अध्यापक में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर यदि है तो आज के सन्दर्भ में 'दक्ष अध्यापक' है। अर्थात् उद्देश्य की पूर्ति अध्यापक की दक्षता पर निर्भर करता है।

अध्यापक, विद्यार्थी एवं अध्यापन शैक्षिक प्रक्रिया के मुख्य घटक है। अध्यापन विद्यार्थियों एवं अध्यापक के मध्य अन्तर्क्रिया से प्रारम्भ होता है, अत: इसे शैक्षिक प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू माना जाता है। हमारे देश में प्रारम्भ में शिक्षा गुरुकुल पद्धति द्वारा गुरु अपने शिष्यों को अनेक कार्यों में संलग्न करते थे। इसी आधार पर शिष्यों की अभिक्षमताओं की परख कर उन्हें तदनुसार शिक्षा देते थे। परन्तु आज अध्यापन की संकल्पना अधिक व्यापक है। आज अध्यापन में अधिगम एवं विद्यार्थी तथा अध्यापक, सहपाठी तथा अभिभावकों के मध्य अन्तर्क्रिया शामिल हैं। कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) ने अध्यापन कार्य में सुधार के अन्तर्गत बताया है कि "उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में जिन सुधारों की आवश्यकता है उनमें एक महत्त्वपूर्ण सुधार अध्यापन का सुधार है। कक्षाओं में औपचारिक सम्पर्क पर छात्र और अध्यापक दोनों की आवश्यकता से अधिक समय व्यतीत करते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि छात्रों को स्वतंत्र अध्ययन का उतना मौका नहीं मिल पाता और अध्यापकों को अपना व्याख्यान तैयार करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता।
यदि विश्वविद्यालय के अध्ययन में गुणवत्ता लानी है तो कुछ परिवर्तन करने होंगे –

- पाठ्यक्रमों में नम्यता रखी जाए और छात्रों को चुनाव की अधिक स्वतंत्रता दी जाए।

- औपचारिक शिक्षा की मात्रा में काफी कमी कर दी जाए और उसी के अनुपात में उपशिक्षण अनुशिक्षकीय कार्य, विचार विनिमय टोलियों, गोष्ठियों और स्वतंत्र अध्ययन के कार्यों को बढ़ावा दिया जाए।
- अध्ययन के स्वरूप में ऐसा परिवर्तन किया जाए कि रट्टेबाजी की आदत छूटे और जिज्ञासा समस्या समाधान की योग्यता तथा मौलिकता को बल मिले। मौलिकता का विकास करने के लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दक्ष शिक्षकों की आवश्यकता है। दक्षता के लिए शिक्षक के व्यवहार में दो तत्त्व का होना आवश्यक है। प्रथम योग्यता तथा द्वितीय इच्छाशक्ति।

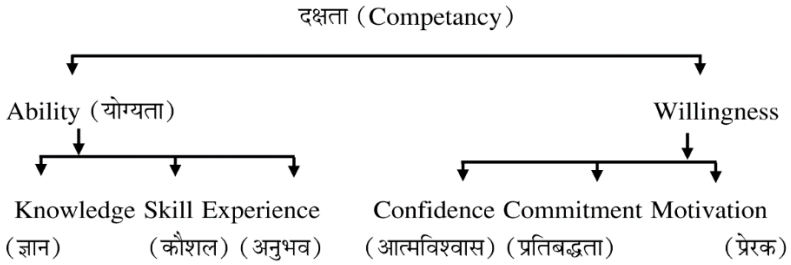

यदि अध्यापक इन तत्त्वों से युक्त होकर अध्यापन कार्य कक्षा में शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत करेंगे तो विद्यार्थी अपने जीवन में मौलिकता का विकास अपने कर सकता है। प्रत्येक लक्ष्य के सोपान होते हैं। यदि Willingness की ओर जाना है तो Ability पहला सोपान है। यदि Ability को देखा जाय उसमें भी सोपान है – प्रथम सोपान ज्ञान द्वितीय Skill और इन दोनों का प्रयोग कर अनुभव प्राप्त होता है। उस अनुभव से यह ज्ञात होता है कि अभी कहाँ और परिवर्तन करने की आवश्यकता है और ये चक्र जीवन भर चलता रहता है। Ability से Willingness पर पहुँचते हैं। Ability में संवर्द्धन कर Willingness की वृद्धि कर सकते हैं। Willingness से अध्यापक आत्मविश्वास से युक्त होकर प्रतिबद्ध तरीके से प्रेरक के कार्य से अपने लक्ष्य को कार्य में परिणति कर सकता है।

अत: इन दोनों तत्वों पर आधारित इस प्रपत्र में उच्च शिक्षा शिक्षक हेतु कुछ दक्षताओं के बारे में वर्णन किया जा रहा है, जो इस प्रकार है –

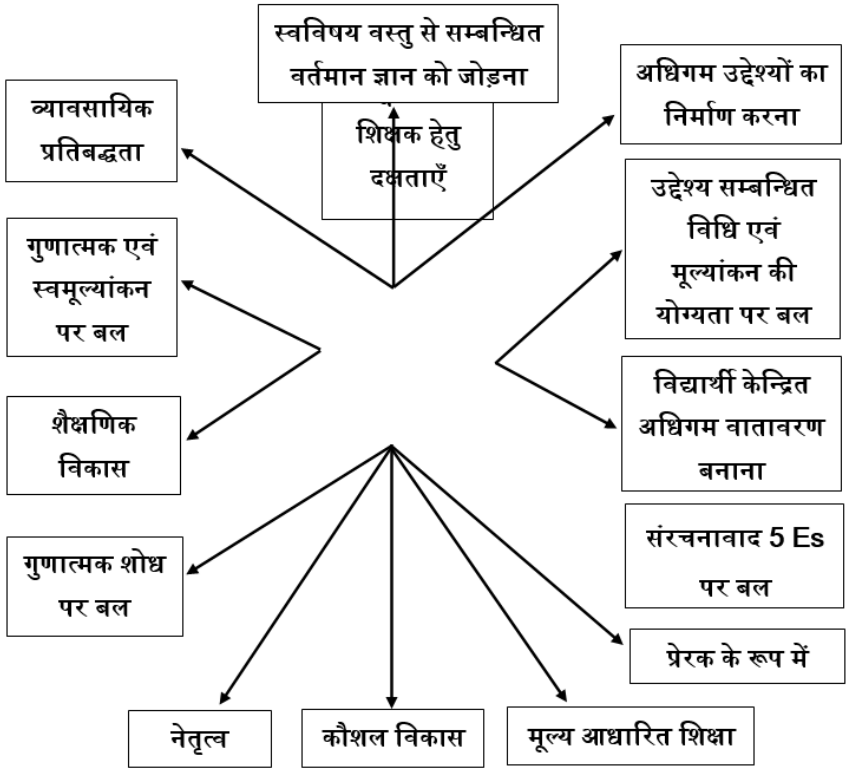

व्यावसायिक प्रतिबद्धता - व्यावसायिक विकास हेतु व्यावसायिक प्रतिबद्धता होना आवश्यक है। इसका केन्द्र बिन्दु शिक्षक ही होता है क्योंकि प्रत्येक विश्वविद्यालय, महाविद्यालय का अपना विजन और मिशन होता है। उस विजन और मिशन को क्रिया में बदलने का मुख्य दायित्व शिक्षकों का होता है। उसको क्रिया में परिवर्तन करने के लिए शिक्षक नेतृत्व करता है। व्यावसायिक प्रतिबद्धता के बिना न ही शिक्षा को गुणवत्ता पर ध्यान दिया जा सकता है और न ही राष्ट्र निर्माण हो सकता है।

विषय वस्तु को वर्तमान ज्ञान से जोड़ना – प्रत्येक विषय वस्तु से सम्बन्धित ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। आज उच्च शिक्षा में शोध पर बल दिया जा रहा है। इन शोधों के आधार पर ज्ञान में नवीन ज्ञान जुड़ते रहते हैं। नवीन ज्ञान के आधार पर ही उस विषय वस्तु की उपयोगिता सिद्ध होती है। छात्रों की रुचि में वृद्धि के लिए नवीन ज्ञान से सम्बन्धित विषयवस्तु को अधिगम उद्देश्यों में रखने पर बल देना चाहिए।

अधिगम उद्देश्यों का निर्माण – शिक्षकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है कि प्रत्येक कक्षा किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अध्यापक, विद्यार्थी एवं अध्यापन ये घटक एक निर्धारित समय पर एकत्रित हुए हैं। अर्थात् सबसे पहले उद्देश्य स्पष्ट एवं व्यवस्थित होने चाहिए। अधिगम उद्देश्य के निर्माण करते समय यह भी ध्यान देना होगा कि क्या वे उद्देश्य केवल ज्ञान स्तर पर आधारित है? या बोध स्तर पर या अनुप्रयोग स्तर पर। यदि इन तीनों स्तर पर ही आधारित है तो छात्रों में केवल निम्न स्तर चिन्तन (Lot) ही विकसित हो पायेगा। अगर उद्देश्य विश्लेषण–संश्लेषण मूल्यांकन स्तर आधारित होगा (Hot) तो छात्र में उच्च स्तर चिन्तन विकसित होगा।

उद्देश्य सम्बन्धित विधि एवं मूल्यांकन की योजना पर बल – अधिगम उद्देश्यों का निर्माण करने के पश्चात् उसकी पूर्ति हेतु उचित विधि का भी प्रयोग करना चाहिए। उच्च शिक्षा में केवल व्याख्यान विधि का ज्यादातर प्रयोग किया जाता है। परन्तु आज के समय में केवल व्याख्यान विधि से हो उद्देश्य पूर्ति नहीं हो सकती है। क्योंकि आज का विद्यार्थी केवल निष्क्रिय रूप में नहीं बैठता बल्कि सक्रिय रूप में बैठता है। अत: शिक्षकों को अनेक विधियों के प्रयोग में दक्ष होना चाहिए। उद्देश्य की पूर्ति हेतु उचित विधि का प्रयोग सही दिशा में विकास के लिए सम्भावना में वृद्धि होती है।

संरचनावाद 5Es पर बल – उच्च शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन तीव्र गति से बढ़ रहा है। और गुणात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा है। संरचनावाद में छात्र को क्रिया आधारित सक्रिय बनाकर स्वयं करके सीखें। इस संरचनावाद के द्वारा स्वयं करके सीखने पर ज्यादा बल दिया गया है। Engage – Explore – Explain – Elaborate – Evaluation ये संरचनावाद के 5 घटक है जिनमें विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया जाता है।

कौशल- दक्षता – कौशल युक्त शिक्षक ही कुशल अध्यापक है। शिक्षक के लिए दो कौशल में कुशल होना चाहिए। प्रथम शिक्षण कौशल द्वितीय व्यावसायिक कौशल। प्रथम शिक्षण कौशल में ही उच्च शिक्षा के विद्यार्थी को कुशल बनाया जा सकता है। शिक्षण कौशल में उद्देश्य योजना से लेकर मूल्यांकन तक प्रत्येक कदम नये नये कौशल का प्रयोग किया जाता है। यथा – प्रस्तावना कौशल, दृष्टान्त कौशल, उदाहरण कौशल, प्रश्नोत्तर कौशल, ग्रहण कौशल, उद्दीपन कौशल, श्यामपट्ट कौशल, पुनर्बलन कौशल, व्याख्या कौशल, अनुवाद कौशल, प्रबन्धन कौशल इत्यादि कौशल के प्रयोग में शिक्षक को दक्ष होना चाहिए। कुशल शिक्षक ही कुशल छात्र का निर्माण कर सकता है।

विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम वातावरण बनाना – कक्षा का वातारण विद्यार्थी केन्द्रित होना चाहिए। परन्तु शिक्षक अपने नेतृत्व से अधिगम को पूर्ति कराने में समर्थ होगा। विद्यार्थी केन्द्रित का अर्थ है ऐसी कक्षा जहाँ ऐसा वातावरण हो सहजता पर आधारित हो, क्रिया आधारित हो। सहजता से उसके विचारों को सुनना और उसके विचारों में वृद्धि करना या परिवर्तन करना।

मूल्य आधारित शिक्षा – शिक्षा आज मूल्य से कहीं दूर हो चुकी है। बिना मूल्य के कोई भी शिक्षा टिक नहीं सकती। आज शिक्षा की स्थिति जो है उसका कारण यही है कि उसमें मूल्य नहीं। मूल्य का तात्पर्य वह शिक्षा क्यों है, उसका उपयोग क्या है और इसकी आवश्यकता क्यों है? इन सबका आधार मूल्य ही है।

कौशल विकास – आज के सन्दर्भ में कुशल होने की आवश्यकता है अब प्रश्न उठता है कि हम किस कुशलता की बात कर रहे हैं, इसका आधार क्या है। क्या नवीन तकनीकी ही इसका आधार है? या चिन्तन में वृद्धि इसका आधार है। कौशल विकास के द्वारा अध्यापक तकनीकी साधन से साध्य की प्राप्ति हो। विकास स्तर कक्षा में चार वर्गों में बाँटा जा सकता है –

	D_1	D_2	D_3	D_4
Ability	Can not do	Can not do	Can do	Can do
Willingness	Will not do	Will do	Will not do	Will do

इन वर्गों के लिए क्या–क्या युक्तियाँ प्रयोग कर सकते हैं। ये चुनौती है।

नेतृत्व का विकास – अध्यापक विद्यार्थी में नेतृत्व की क्षमता का विकास करें। यह कक्षा की नयी चुनौती है। नेतृत्व दो प्रकार से विद्यार्थी कर सकते हैं। प्रथम अपने स्थान पर निर्णय ले सके तथा अपने राष्ट्र के विषय में भी नेतृत्व कर सके।

गुणात्मक शोध पर बल – मात्रात्मक शोध केवल यह निर्देश करता है कि समस्या क्या हैं, कहाँ है और कितना है। परन्तु गुणात्मक शोध से उस समस्या का समाधान कैसे हो यह गति प्रदान करता है। दोनों प्रकार के शोध अन्योन्याश्रित है। शिक्षकों को गुणात्मक शोध पर अधिक बल देना चाहिए।

शैक्षणिक विकास – अध्यापक समयानुसार परिवर्तन की आवश्यकता को देखकर शिक्षा से सम्बन्धित विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग ले। FIP, TLC, NRC आदि कार्यक्रमों में प्रतिभाग लेकर अपनी शिक्षा में वृद्धि करनी चाहिए।

गुणात्मक एवं स्वमूल्यांकन पर बल – अध्यापकों को स्वमूल्यांकन हमेशा करते रहना चाहिए। पर समस्या यह है अध्यापक का मूल्यांकन आज कोई नहीं कर रहा है आत यही है कि समस्या किसी और की समाधान कोई और निकाल रहा है।

निष्कर्ष – अन्त में यही कहा जा सकता है कि आज शिक्षक और विद्यार्थी दोनों अपना दायित्व व अधिकार का उचित प्रयोग करे, शिक्षा की दिशा और दशा तभी ठीक हो सकती है शिक्षक अपने आप में दक्ष है और उसका प्रयोग भी करता है परन्तु क्या ऐसा वातावरण है जो उसकी दक्षता का परिचय दे सकें। शिक्षकों का मानवीय संवर्द्धन के लिए उसको स्वतन्त्रता देनी चाहिए। व्यावसायिक संवर्द्धन की जगह मानवीय दायित्व संवर्द्धन पर बल देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Pandey K.P. (2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पो. बॉ. 1149, वाराणसी।
2. पाल, हंसराज (2015) उच्च शिक्षा में अध्यापन एवं प्रशिक्षण की प्रविधियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय।
3. गुप्ता, एस.पी. (2005) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. लाल, रमन बिहारी (2017–18) – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज–शास्त्रीय आधार, आर. लाल, बुक डिपो, मेरठ।
6. ओड, एल. के. (2010) – शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि (तेरहवाँ संस्करण)।
7. पाण्डेय, रामशकल (2009) – पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा दर्शन, R. Lal Book डिपो, मेरठ।